।। श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: ।।

श्री आचार्यजी महाप्रभुजी - श्री गुसांईजी परमदयाल के लाड़िले
महानुभाव श्री गिरिधरजी के सर्वस्व पुष्टिमार्ग के प्रधान निधि

श्री नवनीतप्रियाजी की सेवा प्रणालिका

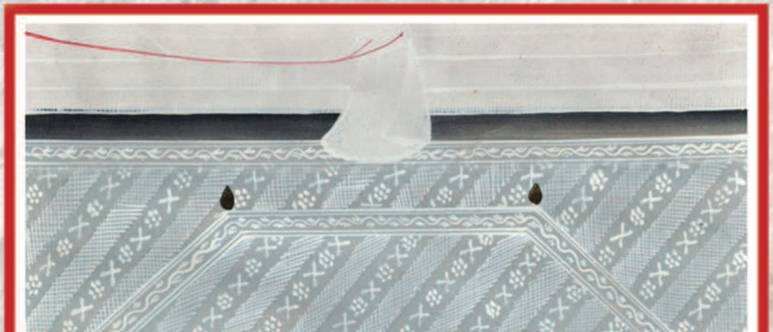

जगद्गुरू श्री मद्वल्लभाचार्यजी प्रवर्तित पुष्टिमार्गीय
प्रधानपीठस्थ गोस्वामी तिलकायत श्री वल्लभकुल चक्रचूड़ामणि
श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराजश्री की आज्ञा सूं
लाड़िलेलाल श्री नवनीतप्रियाजी की अतिसूक्ष्म वैष्णवोपयोगी प्रणालिका

।। श्री गोवर्द्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयतः ।।

श्री आचार्यजी महाप्रभुजी प्रवर्तित पुष्टिमार्ग में प्रभु को लाड़ लड़ायवे के लिये प्रभु सुखार्थ श्री गुसांईजी परमदयाल ने जो सेवा प्रकार प्रतिपादित कियो है सो प्रेम की पराकाष्ठा ही है ।

जब सेवा प्रकार व्यवस्थित प्रकार सो होवे है तो वामें रस अपने आप प्रकट होवे है और ये प्रभु के प्रति प्रीति को वर्धन करवे वालो हो जावे है ।

चि. गो. श्री विशाल बावा ने तिलकायत गृह के सेवकन के मनोरथन को ध्यान रखते भये निज सृष्टि को सेवोन्मुख करवे के लिये एवं सेवा के विषय को कुशलता सूं समझायवे के लिये ये प्रणालिका के संपादन को एवं प्रकाशन को जो कार्य कियो है सो अति सराहनीय है एवं याके लिये बावाश्री को मेरे हार्दिक शुभाशीर्वाद है ।

ये वैष्णवोपयोगी प्रणालिका निजसृष्टि को, सेवाक्रम को समझवे में एवं लाड़िलेलाल प्रभु के प्रति प्रेम-आसक्ति को बढ़ावे में सहायक हो एसे मेरे सभी वैष्णवन को शुभाशिष है ।

गो. ति. श्री इन्द्रमनजी महाराज

दिनांक : १२.११.२०१५

नाथद्वारा

। । श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: । ।

प्राथक्कन

श्री आचार्यजी महाप्रभुजी प्रवर्तित शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद याने पुष्टिमार्ग को परम साधन एवं फल श्रीप्रभुन की सेवा ही है ।

''अत: सेवा परम्चित्तं''

''शास्त्रमवगत्य मनोवाग्देहै: कृष्ण: सेव्य:''

''कृष्ण सेवा सदा कार्या''

आदि वचनों द्वारा श्री आचार्यजी ने सदैव सेवा की ही आज्ञा कर के याको सर्वोपरि जनायो है । रसेश्वर श्री लाडिलेलाल को रिझा सके ऐसी सेवा को प्रकार या तो श्री आचार्यजी महाप्रभुजी प्रकट कर सके है या श्री गुसांईजी परमदयाल । याही लिये श्री महाप्रभुजी को नाम श्री गुसांईजी ने श्री वल्लभाष्टकं में प्रकट कियो है ।

''कृष्ण सेवा रसाब्धि''

सो श्रीकृष्ण की सेवा रस के सागर तो आपश्री आचार्यजी ही है सो श्री प्रभुन को मूल क्रम तो आपने ही प्रकट कियो है । और श्री गुसांईजी को नाम श्री रघुनाथजी ने नामरत्नाख्य स्तोत्र में प्रकट कियो है ।

''पितृप्रवर्तित पथ प्रचारक - सुविचारक:''

सो श्री आचार्यजी के प्रकट किये भये सेवा क्रम को सुविचारपूर्वक विस्तार एवं बंधान श्री प्रभुचरण ने कियो है ।

सो निकुंजनायक प्रभु श्रीनाथजी एवं यशोदोत्संगलालित प्रभु श्री नवनीतप्रियाजी आप दोऊ स्वरूपन की सेवा में मार्ग को सब सेवा क्रम श्री आचार्यजी महाप्रभुजी एवं श्री प्रभुचरण ने प्रकट कियो है सो ये ही मूल क्रम आज भी यहाँ विद्यमान है ।

सो निकुंजनायक प्रभु श्रीनाथजी के सेवा क्रम में सब भावन् को समान रीत सूं अंगीकार कराते भये भी मुख्यता तो आपश्री ने निकुंजलीला की ही राखी है सो प्राचीन समय सूं सैद्धान्तिक प्रकार सू श्रीनाथजी को क्रम ना तो कोई बालकन के मंदिर में राख्यो गयो है ना ही वैष्णव के घरन् में ।

''श्रीजी को क्रम तो श्रीजी में ही शक्य है ।''

सो ऐतिहासिक दृष्टि सूं सात निधिन के मंदिर में और सब बालकन के मंदिर में मूल रूप सूं श्री नवनीतप्रियाजी की जो रीत श्री आचार्यजी एवं श्री गुसांईजी ने प्रकट की है सो ही चले है । वामें फेर पीछे सू स्वरूप के भेद सो, लीला भेद सो, वाघर के बालकन के भाव सो, वा घर के उत्सव - मनोरथन सू परिवर्तन आयो सो श्री नवनीतप्रियाजी की ही प्रणालिका को संशोधित रूप आज सात घरन की न्यारी न्यारी प्रणालिका है और फेर वाको और संशोधन हो के उपघरन की प्रणालिका भई ।

परंतु लाडिलेलाल को क्रम तो लाडिलेलाल के घर में ही शक्य है और श्री प्रभुचरण की कृपा सूं तिलकायत महाराज सूं ही शक्य है ।

आधुनिक युग में समयाभाव एवं सुदूरस्थानादि होवें के कारण अपने गुरून के सानिध्य में रहकर सेवाक्रम सिखवे को क्रम लोप होतो जा रह्यो है । सो तिलकायत घर के सेवकन की स्वगुरूगृह निधि प्रभु श्री लाडिलेलाल के प्रति आसक्ति होवें सू एवं स्वगुरूगृह की प्रणालिका को आग्रह होवे सूं मनोरथाचार्य श्री वल्लभकुल कौस्तुभ गो.ति.श्री इन्द्रदमनजी महाराजश्री ने अतुलित कृपा करिके श्री नवनीतप्रिय प्रभु की वैष्णवोपयोगी अतिसूक्ष्म सेवा प्रणालिका प्रकट करिवे की आज्ञा प्रदान की ।

सो अतिसूक्ष्म क्यों ? क्योंकि आपको पूर्णसेवाक्रम तो अतिवृह्द है सो आपके निजगृह में ही संभव है ।

फिर भी सेवा-क्रम में मुख्य सभी क्रमनको समावेश कियो गयो है जो वैष्णवोपयोगी सिद्ध होयगो एवं तिलकायत गृह के सवकन कूं ''सेवा कृर्तिगुरोराज्ञा'' ये श्री आचार्यचरण की आज्ञा कूं निभावे में श्री आचार्यचरण की कृपा सू सहायक भी सिद्ध होयगो एसो मेरो दृढ़ विश्वास है ।

श्री लाडिलेलाल प्रभु श्री नवनीतप्रियाजी की सेवा को अनुसंधान एवं आपके माथे विराजते पुष्टिपुरूषोत्तम प्रभु की सेवा में रति-मति-एवं गति को सदैव आपमें वर्धन होवे या 'सेवा-प्रणालिका' के दर्शन एवं अनुकरण सों, एसे मेरे शुभाशीष है ।

- इति शुभम्

गो. विशाल (भूपेश कुमार)
नाथद्वारा

।। श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: ।।

।। प्रधान गृहनिधि प्रभु श्री नवनीतप्रियाजी के घर की वर्षभर की प्रणालिका ।।

-भाद्रपद कृष्ण - अष्टमी - नवमी -

- जन्माष्टमी - नन्दमहोत्सव -

मंगला - श्री प्रभु जागे बेग सो । जागते भये में बधाई गवे ''आज बडो दरबार'' । मंगल भोग धरनो । वारा सेव के लाडू को । भोग धर के पंचामृत की तैयारी करनी । भोग सरे आचमन मुखवस्त्र करनो । मंगला आरती होवें ।

पंचामृत - घी, शहद, दूध, दही, बूरा, कंकू-पीताक्षत, तुलसीदल, ठंडो जल, समोयो गर्म जल, स्नान को पट्टा, शंख, सूखी हल्दी, अभ्यंग की सब तैयारी ।

सुखी हल्दी को अष्टदल मांडनो वापे थाल एवं पट्टा पधरानो । पट्टा पर कंकू को अष्टदल एवं वापे लाल वस्त्र बिछानो । श्री प्रभुन कूं सिंगार वड़े करके पधराने पीछे तिलक - अक्षत करनो । निवेदन मंत्र बोलते भये तुलसीदल समर्पित करने । शंख एवं सब डबरीयान में तुलसी पत्र पधरावने । संकल्प करनो । फेर पंचामृत श्री आचार्यजी को स्मरण एवं नमन करके प्रारंभ करनो । प्रथम दूध फेर दही, घी, बूरा, शहद पीछे फेर दूध एवं छेल्ले ठंडे जल सू करनो । पीछे अभ्यंग करावनो । अंगवस्त्र करिके फेर अत्तर समर्पित करनो । पीछे श्रृंगार के पाट पर श्री कूं पधरावनो ।

श्रृंगार - केसरी जामदानी को वागा धरनो । पीछे अंजन करनो । कमलपत्र होवें । फेर सिंगार धरने । कुल्हे चित्र की । पाँच को जोड़ । पान - तुर्रा हीरा के । मकराकृत कुंडल । बड़े फोंदना । उत्सव के सब आभरण शीशफूल हीरा को अर्द्धचंद्र । तीन जोड़ को भारी सिंगार । कटला, त्रवल, बघनख सब आवे । सिंगार होते भये सिंगार भोग पीस में धरनो । प्रभुन कूं सिंहासन पर पधरावने । आरसी दिखाने । चून के दिवला की आरती प्रकटा के प्रभुन कू तिलक अक्षत दो बेर शलाका सूं करनो । पीछे बीरा दो कंकू में बोर के श्री प्रभुन के दक्षिण भाग में सिंहासन पर पधरावने । २ श्रीफल भेंट समेत धरने । तुलसीदल समर्पने । मुठियावार के आरती करनी । सब आपस में तिलक करें ।

राजभोग - मन्मनोहर के लडुवा, बिलसारू, पापड़, कचड़िया, केसरी फेनी, खीर चौखा की, भुजेना, दाख को रायता और सब उत्सव की सामग्री धरें । भोग सरें आचमन मुखवस्त्र होवें । बीरी अरोगे । मालाजी धरें । सब जड़ाऊ साहित्य आवें । सब साज राजभोग को मंडे । पट चौपड़ को बिछे । नित्यवत सब क्रम होकर अनोसर होवे ।

उत्थापन - शयन - नित्यवत् । शयन भोग धरके नंदमहोत्सव को पलना साजनो ।

जागरण - (यें क्रम मंदिर में होवे) शयन पीछे राजभोग दर्शनवत् साज मंडे । झुनझुना आदि सू खिलावे । जन्म समय के पंचामृत । महाभोग आवे ।

नंदमहोत्सव - सब सिंगार आदि जन्माष्टमीवत् ही रहें । (जहाँ प्रभु जन्माष्टमी के दिन पोढ़ें वहाँ के लिये) नंदमहोत्सव के दिन नित्यवत् क्रम होवें । राजभोग अरोग के प्रभु पलना में पधारे । सब कीर्तन होय । पितांबर ओढ़ानो । भेंट धरनी । आरती करनी । फेर नित्यवत् अनोसर तक सब क्रम पहोंचनो ।

मास - भाद्रपद (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
दशमी	(नियम को श्रृंगार)	परचारगी को सिंगार श्रृंगार समय बघनखा धरें । बड़े कंठला नहीं आवें । श्रृंगार थोड़ो जन्माष्टमी सूं हल्को । अनोसर में कुल्हे रहें ।	जन्माष्टमीवालो नयो साज रहे । काशी के काम को भारी साज हट जावें ।	बूंदी मेवा भात कंद	जड़ाऊ साज सब विजय होंवे सांझ कूं ।
एकादशी	(रीत को श्रृंगार)	केसरी झालर की टोपी वस्त्र केसरी जन्माष्टमी के । (वागा नहीं धरे ।) आभरण उत्सव के । फोन्दना छोटे । श्रृंगार हीरा माणक के । कंठला गादी पर एक राधाष्टमी तक नित्य आवें ।	नंद-महोत्सव की (चित्र की)	पंजीरी - माखन मिश्री की कटोरी आज सूं राधाष्टमी तक आवें ।	आज सूं सफेदी चढ़े ।
द्वादशी		पचरंगी लहरिया के वस्त्र पन्ना के आभरण । बाबरी टोपी ।	नंद-महोत्सव की (चित्र की)		ति. श्री दाऊजी (तृतीय) कृत नियम को नंदभवन में पलना को मनोरथ । लालन चौतरा या निजमंदिर के बगीचा में पधारे ।
त्रयोदशी		फिरोजी वस्त्र गुलाबी मीना के आभरण, गोल पाग - फिरोजी कतरा चमकनो	फिरोजी		
चतुर्दशी	श्री काका वल्लभजी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	पीले वस्त्र, फिरोजाई आभरण, कसुमल कुल्हे जोड़ चमकना, फोन्दना मध्य के	पीलो मखमल को		
अमावस		कोयली रंग के वस्त्र हीरा की टोपी बाबरी श्याम	नंद-महोत्सव की (चित्र की)		

मास - भाद्रपद (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम्	श्री राधाष्टमी की बधाई बैठे ।	केसरी वस्त्र, केसरी गोल पाग, कतरा एक चमकनो, पन्ना के आभरण ।	केसरी		
द्वितीया		राजाशाही लहरिया के वस्त्र, हीरा की टोपी तीन फोन्दना वाली । फोन्दना धरें ।	लहरिया के		
तृतीया		अमरसी वस्त्र, समला की टोपी, आभरण फिरोजा के	अमरसी		
चतुर्थी	डंडा चौथ	लाल चौफुली चुनरी के वस्त्र । चुनरी की छज्जेदार पाग, आभरण तड़तड़ी के (हीरा के) लूम की कलंगी, लूम - तुर्रा (रूपेरी)	बाललीला की । डांडिया की (चित्र की)	चुरमा (सखड़ी में)	
पंचमी	श्री चंद्रावलीजी को उत्सव	वस्त्र एक दाली चुनरी के । चुनरी की कुल्हे । कुल्हे पर तीन बादला के तुर्रा । हीरा पन्ना के आभरण । पन्ना की चोटी ।	बाललीला की । डांडिया की (चित्र की)	मनोर के लड़वा हाण्डी मंड़ला	
षष्ठी	ति. श्री विठ्ठलेशरायजी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	वस्त्र पचरंगी लहरिया के । छज्जेदार पाग, हीरा के आभरण सादा चंद्रिका । कर्णफूल चार । फोन्दना छोटे ।	लहरिया को	बूंदी, जलेबी, बिलसारू, खीर, बड़ा की छाछ	अनोरस में पाग पर शीशफूल रहे । (थाली की आरती)
सप्तमी		वस्त्र कसुमल, गोल पाग, सादा मोरचंद्रिका बांकी, पन्ना के आभरण ।	कसुमल साज		सफेदी बड़ी हो जाय ।
अष्टमी	श्री राधाष्टमी	अभ्यंग, वस्त्र केसरी जामदानी के, बागाधरें, कुल्हे केसरी, पाँच चंद्रिका को जोड़, कमलपत्र, कुंडल मकराकृति, फोन्दना बड़े । श्रृंगार मिलमा भारी दुहेरा । ❖ राजभोग में कुंजा आबखोरा आवे । ❖ सांझ कू ढाढी ढाढीन लाडिलेलाल के सन्मुख नाचे । ❖ कुल्हे धर के अनोसर होय ।	नयो जन्माष्टमी वालो	बूंदी को वारा पाँच भात छड़ियल दाल पापड, कचरिया तीन कूड़ा बड़ी केरशाक बिलसारू मठड़ी, सफेद फेनी, केसरी फेनी, खीर, बड़ा की छाछ, मेदा की पूड़ि, सिखरन बड़ी, भूजिना ४ और सब उत्सव की सामग्री	आरती थाली की साज सब जडाऊ। राजभोग आये पहले गुलाल अबीर, चोवा, चंदन सूं सूक्ष्म खेल होवे आरसी देखें फेर तिलक अक्षत होवें प्रभू कूं । फेर आरती होवे । फेर श्रीफल एवं भेट करनी । बीड़ा धरनो कंकु में बोरे भये । पीछे थाल सने एवं राजभोग आवे ।

मास - भाद्रपद (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
नवमी	रीत को सिंगार परचारगी को	कुल्हे पर पान धरे श्रीकंठ में बघनखा धरे । वागा धरे ।	सब राधाष्टमी को	सेव के लडुआ मेवा – भात	सांझ कू गादी तकिया पर सफेदी चढ़ जाय ।
दशमी		कसुमल वस्त्र, गोल पाग, चंद्रिका सादा बाकीं, पन्ना के आभरण	कसुमल		
एकादशी	दान – एकादशी	कसुमल वस्त्र, माणक को मुकुट, माणक के आभरण मयुराकृत कुंडल, फोंदना बड़े, भारी सिंगार, चोटीं नहीं धरे ।	दान के चित्र को	दान की हाण्डी दो नित्य आरोगे एक दूध की एक मीठे दही की आसोज व एकादशी ताई	दान एकादशी सो आ. व. ११ ताई चोटी नहीं धरे ।
द्वादशी	वामन द्वादशी	अभ्यंग, वस्त्र केसरी मलमल के, कुल्हे तीन चंद्रिका को जोड़, पन्ना के पान तुर्रा, आभरण मिलमा । झारीजी यमुनाजल की भरें । कुल्हे धर के अनोसर होय ।	नयो जन्माष्टमी को	रायता दाख को, फलाहार खोवा के गुंजा	राजभोग में पंचामृत होवे श्री बालकृष्णजी के । श्री बालकृष्णजी को तिलक होवें । श्री नवनीतप्रियाजी को नहीं होवें ।
		(अगर दान एकादशी एवं वामन द्वादशी भेले होय तो वस्त्र केसरी धरे एवं श्रृंगार दान एकादशी को होय ।) (पिछवाई दान की बंधे । अनोसर में कुल्हे धर के पोढ़े ।) (अगले दिन वामन द्वादशी को सब क्रम होवें श्रृंगार कुल्हे या किरीट को रहे । वस्त्र केसरी ही आवें ।)			
त्रयोदशी		परचारगी को सिंगार । कुल्हे की जगह किरीट भी धरे कभी कभी ।	जन्माष्टमी को नयो		
चतुर्दशी		एकदाली चुनरी के वस्त्र, गोलपाग, आभरण फिरोजा के । श्रृंगार हल्को ।			
पूर्णिमा		हीरा को मुकुट, आभरण हीरा के, वस्त्र खसखसी पन्ना के आभरण ।	दान को		शयन में सांझी को पट्टा आवे । गेंद छड़ी दो – दो फूल की आवे ।

मास - आसोज (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम्		पीले वस्त्र, पीली गोल पाग, कतरा चमकनो, आभरण पन्ना के, श्रृंगार हल्को ।	धनक को		
द्वितीया		कसूमल वस्त्र, कसूमल फेंटा, लोलक बिंदी, आभरण हीरा एवं नीलम के । कतरा, चंद्रिका चमकने । श्रृंगार मध्य को ।			
तृतीया		पीले वस्त्र, पीली गोल पाग, फिरोजा को मुकुट, फिरोजा एवं हीरा के मेल के आभरण । श्रृंगार भारी ।			
चतुर्थी		फिरोजी रंग के वस्त्र, चार कर्णफूल । फिरोजा के आभरण । चमकनी चंद्रिका, श्रृंगार मध्य को ।	लाल धनक को		
पंचमी	श्री हरिरायजी महाप्रभुजी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	केसरी वस्त्र, फिरोजा को मुकुट, फिरोजा के आभरण, मध्य को श्रृंगार फोंदना पर ।	पीलो लहरिया को	बूंदी, जलेबी	
षष्ठी		पीले लहरिया के वस्त्र, पन्ना को मुकुट, पन्ना के आभरण । मध्य के फोंदना ।	साज एकदाली चुनरी को		
सप्तमी		कसुमल धोरा के वस्त्र, पन्ना के आभरण । श्री मस्तक पर टोपी । श्रृंगार हल्को ।			
अष्टमी	श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमजी को उत्सव	नीलम को मुकुट । नीलम के आभरण । वस्त्र पीले । मध्य के फोंदना । कुंडल हीरा के ।	पीलो		
नवमी		वस्त्र केसरी । कसुमल गोल पाग । कतरा जमाव को । श्रृंगार हल्को ।	श्याम धनक को		
दशमी		कसुमल वस्त्र, फिरोजा को मुकुट, फोंदना मध्य के, आभरण सब फिरोजा के ।	लाल धनक को		
एकादशी		हीरा को मुकुट । मध्य के फोंदना । हीरा मोती के आभरण । वस्त्र श्याम धोरा के । मयूराकृत कुंडल ।	दान के चित्र को साज		
द्वादशी	श्री आचार्यजी के बड़े लालजी श्री गोपीनाथजी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	कसुमल वस्त्र, कुल्हे, पाँच चंद्रिका को जोड़ । पन्ना के आभरण । श्रृंगार भारी । फोंदना मध्य के । चोटी धरे । कुल्हे धर के पोढ़े ।	कसूमल	हांडा, लुचई	

मास - आसोज (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
त्रयोदशी	श्री गुसांईजी के तृतीय लालजी श्री बालकृष्णजी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	केसरी वस्त्र, केसरी कुल्हे, जोड़ चमकनो, सुनहरी, माणक के आभरण । श्रृंगार भारी । अनोसर में कुल्हे धर के पोढ़े ।	केसरी	लुचई, हांडी	
चतुर्दशी		फिरोजी धोरा के वस्त्र, फिरोजी टोपी, गुलाबी मीना के आभरण । श्रृंगार हल्को ।	ठकुरानी तीज वाले	कुर के गुंजा	सांझी के पट्टा पर चमक को कोट मंडे ।
अमावस्या		वस्त्र श्याम धोरा के । मुकुट फिरोजा को । आभरण हीरा एवं फिरोजा के मिलमा । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी । चोटी नहीं धरे ।	महादान को चित्र को		शयन पीछे लाल छापा को चंदरवा बंधे ।

मास - आसोज (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम्	नवरात्री प्रारंभ (नवविलास) (रीत को सिंगार)	अभ्यंग, वस्त्र लाल छापा के, कसुमल कुल्हे, पान तुर्रा हीरा के, चोटी हीरा की, हीरा की जोड़ी, गादी को सिंगार दुहेरो, पाँच चंद्रिका को जोड़, सब उत्सववत् क्रम । अनोसर में कुल्हे धर के पोढ़े ।	लाल छापा के	मनोहर के लड्डुवा, छाछ वड़ा हांडी पकोड़ी की कढ़ी, बड़ी को शाक	आज सूं बागा शुरू । ठाड़े स्वरूप खुंले बन्ध को बागा धरें । शय्याजी पर छापा की चादर ओढ़े । बागा संध्या आरती पीछे बड़ो हो जाये ।
द्वितीया		पीले छापा के वस्त्र । पीलो खूंट को दुमाला । सेहरा । फिरोजा की जोड़ी । फिरोजा के कुंडल ।	पीले छापा को	बाबर, खंडरा की कढ़ी	
तृतीया		हरे छापा वस्त्र । ग्वाल पाग । मोरशिखा सुनहरी चमकनी । माणक की जोड़ी । कुंडल ।	हरे छापा को झाड़ वालो	बूंदी के लड्डुवा, सेंव	
चतुर्थी	श्री दाऊजी महाराज (द्वितीय) को उत्सव (दुहेरा मण्डान) (रीत को श्रृंगार)	केसरी डोरिया के वस्त्र । गोल पाग । लूम की कलंगी । पन्ना के आभरण । तीन ठेकड़ा वालो सिरपेच । कर्णफूल दो पन्ना के । दो कंठुला । श्रृंगार हल्को । वेत्र गादी के दोई आड़ी आवे । गेंद चौगान भी दोई आड़ी दुहेरा आवे । चोपड़ को पट लाल दुहेरे घर वालो । फूल की माला सब समय की दुहेरी । झारी दुहेरी । बीड़ा दोहरे । आरती दुहेरी अनोसर में पाग धर के पोढ़ें ।	चित्र की (ब्यावला की)	मनोर के लड्डुवा, बूंदी, जलेबी । चोला की गुंजिया । पाँच भाँत । तीन कुडा । मिरच को शाक खीर । बड़ी के शाक रायता । बरफी । सिखरन । मट्ठा । और भी नित्य की सामग्री सब दुहेरी आवे ।	नाथद्वारा में प्रधान निधि प्रभु श्री नवनीतप्रियाजी में दुहेरो मण्डान होवें । सेवकन कूं भी अपने घर में यथाशक्ति दुहेरो क्रम अंगीकार करा के लाड़ लडानो । *भोग को समय भी अधिक लेनो । *शंखनाद दुहेरे । (दोनो समय)
पंचमी		फेंटा या पाग धरे । वस्त्र छापा के । रंग को नियम नहीं ।		सखड़ी में बेसन की गोली को प्रकार होय ।	
षष्ठी		वस्त्र छापा के गुलाबी । जोड़ी पन्ना की । खूंट को दुमाल । या टीपारा धरें । फोंदना धरें । श्रृंगार मध्य के ।			
सप्तमी		श्याम छापा के वस्त्र । गोल पाग, लूमतुर्रा सुनहरी । हीरा के आभरण । श्रृंगार हल्को । कतरा एक चमकनो ।		पपची एवं सेव	
अष्टमी		सफेद छापा के वस्त्र । सुनहरी डांक को मुकुट । पन्ना हीरा के मिलमा आभरण ।		मनोहर के लड्डुवा	
नवमी		लाल छापा के वस्त्र । लाल गोल पाग । पन्ना के आभरण । बांकी चंद्रिका । श्रृंगार हल्को ।		दहीथरा	

।। श्री गोवर्द्धनधरः नवनीतप्रियौ विजयतः ।।

मास - आसोज (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
दशमी	दशहरा श्री गिरिधरजी के बड़े लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव	सफेद जरी के वस्त्र । मंगला में सफेद छापा को उपरना ओढ़े । अभ्यंग । कर्णफूल चार माणक के । सिरपेच पटिया को । लूम माणक की । चंद्रिका सादा एक । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी । आभरण मिलमा राजभोग सू श्री प्रियाजी काँच के बड़े सिंहासन पर विराजें । पाट पर सतरंज बिछे । अनोसर में चीरा धर के पोढ़े । * निजतिबारी में राजभोग समय आज सूं नित्य गाय मंडे (गोपाष्टमी तक)	सफेद जरी के	बिलसारू, पाटिया, मनोर के झारा की सेंव । खोवा के गुंजा । खीर, बड़ा की छाछ कन्द	*कंद धरे पर सकरकन्द देव प्रबोधिनी सूं प्रारंभ होवे । *सांझ कूं उत्थापन भोग धर के जवारा की कलंगी पीले रेशम के डोरा सूं बांधनी तिलक की तैयारी करनी । वामें कंकु, अक्षत, गुलाबजल, शलाका, बीड़ा, दो कंकु लगाय के एवं तुलसीदल राखने ।
भोग सराने । खंड पाट साजने । घंटानाद होय । तिलक अक्षत होय । पीछे चंद्रिका विजय करनी । और वहाँ जवारा की कलंगी धरावनी । थोड़े खुले जवारा चरणारविंद में पधरावने । तुलसीजी समर्पने । बीड़ा जेमनी आड़ी बंटा के पास धरने । .... । उत्सव भोग में विशेष में १० माठ आवें । बाकी सब दूधघर की सामग्री भी आवे । चौक में भोग धरें पीछे दशहरा पूजन होवे । (आकासी दीप चढ़े कार्तिक सुद पुनम तक रहे ।)					
एकादशी		डांक को मुकुट धरें ।	महारास को (चित्रकी)		मंगला में जरी के आत्मसुख धर के विराजे आज सूं *रास के दिनों में मुकुट धरें तब चोटी नहीं धरें ।
द्वादशी		पन्ना को मुकुट । पन्ना की जोड़ी । वस्त्र लाल जरी ।	महारास को		
त्रयोदशी		श्याम जरी के वस्त्र । चीरा । जमाव को कतरा । फोंदना । हीरा को जोड़ी ।	श्याम जरी को		
चतुर्दशी		सफेद जरी के वस्त्र । हीरा को मुकुट । मयुराकृत कुंडल । हीरा को जोड़ी । शयन में खिड़की की पाग धर के विराजे । (श्याम खिड़की की)	सफेद जरी को तारन को		
पूनम	शरद पूर्णिमा	अभ्यंग होय । सफेद जरी के वस्त्र । हीरा को मुकुट आवे । शीशफूल अर्धचन्द्र हीरा को आवे । हीरा के मकराकृत कुंडल । फोंदना बड़े । कमलपत्र होय । गादी को श्रृंगार दुहेरा । चोटी नहीं धरें । जोड़ी हीरा की । सांझ कूं शरद की आरती पीछे श्रृंगार विजय होके पाग धर के पोढे । आभरण सब शैया के पास छाब में पधरावने ।		मनोहर के लड्डुवा । दूध की हांडी, रात्री को शरद में खाजा घेवर बूरा भुरक्या चौखा को मगद चौखा की खीर सिखरन बड़ी छाछ बड़ा बिलसारू फल सब तरह के मेदा की की पूरी खरखरी गुंजा एवं सब दूधघर की सामग्री दूध की हांडी	सांझ कू श्रृंगार विजय नहीं होवे । शयन भोग धर के चौक खासा करनो । सब सफेद विछात करवानी शरद को साज आवे । सिंहासन खंड पाट लगावनो गुलाबदानी चंदन की बरनी सब जड़ाऊ आवे बीरा अधकी आवे । श्री कूं पधरावने । भोग पास में धरने । झारीजी पर सफेद नेवरा आवें । मुकुट पर चांदनी आवे तब आरती होवे न्योछावर राइ लोन होवें ।

मास - कार्तिक (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम्	दूसरी शरद	शरद पूर्णिमा के ही श्रृंगार होवे । अनोसर में पाग रहें ।	शरद उत्सव की	शरद की	श्री नवनीतप्रियाजी में आज शरद के दर्शन होय । (शयन समय)
द्वितीया	दशमी को श्रृंगार	सफेद सुनहरी कारचोब के वस्त्र । चीरा । लुम की कलंगी । पन्ना की जोड़ी । श्रृंगार हल्को ।	वस्त्रानुसार पिछवाई झाड़ की		
तृतीया		वस्त्र पीली जरी के पीलो दुमाला चंद्रिका एवं कतरा सादा । आभरण हीरा मोती के फोंदना मध्य के । अनोसर में पाग रहें ।	पीली जरी को		ये श्रृंगार होय जब सू सांझ कूं शयन में गोवर्धन लीला गवें । (अपने अपने टोल)
चतुर्थी	द्वादशी को श्रृंगार	पीली जरी के वस्त्र चीरा । पन्ना के आभरण मध्य के फोंदना । कर्णफूल ४ । चंद्रिका चमकनी । श्रृंगार मध्य सू भारी ।	पीली जरी को		
पंचमी	राते पियरे टिपारे को सिंगार	लाल जरी के वस्त्र टिपारा पीली जरी को पेच तुर्रा लाल । चंद्रिका कतरा सादा । पिरोजा के आभरण । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी ।			राजभोग में कीर्तन होय ''मदन गोपाल गोवर्धन पूजत''
षष्ठी	धनतेरस को सिंगार	हरी जरी के वस्त्र चीरा फोंदना मध्य के । माणक के आभरण चार कर्णफूल ।	हरी जरी को		
सप्तमी	मुकुट	मुकुट के साथ वस्त्र जरी के रंग को नियम नहीं ।		सामग्री भी उत्सवन की आवे	हटड़ी प्रारंभ
अष्टमी	रूप चौदस एवं दिवाली के सिंगार होवे	रूपचौदस को सिंगार ।			
नवमी		दिवाली को सिंगार ।			
दशमी	(नियम को श्रृंगार)	सफेद सुनहरी बूंटी के कारचोब के । चीरा श्वेत पन्ना की जोड़ी । श्रृंगार हल्को । शयन में लूम तुर्रा धर के काँच के बंगला में विराजे । अनोसर में चीरा रहे ।	वस्त्रानुसार साज	मनोर के लडुवा	सफेदी उतरे । * चौदस की दिवाली होय तो ये *श्रृंगार नवमी सू प्रारंभ हो जाये ।
एकादशी	रीत को सिंगार	श्याम जरी को वस्त्र । श्याम चीरा । जमाव को कतरा । कर्णफूल चार । छोटे फोंदना । हीरा की जोड़ी । अनोसर में चीरा रहे ।	श्याम जरी को	बूंदी के लडुवा	दिन मुहुर्त देख के अन्नकूट की रसोई में कढ़ाई को मुहुर्त होवें ।
द्वादशी	रीत को सिंगार	पीली जरी के वस्त्र एवं चीरा । सुनेरी चमकनी चंद्रिका । कर्णफूल चार । पन्ना की जोड़ी । फोंदना मध्य के । शयन में बगीचा में काँच की हटड़ी में विराजे दीपदान होवें ।	पीली जरी को	मेवाबाटी	टाटवाफीकी के तकिया की और सब खोली चढ़ें ।

मास - कार्तिक (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
त्रयोदशी	धनतेरस	हरी जरी के वस्त्र चीरा । माणक की जोड़ी । फोंदना बड़े । चंद्रिका सादा एक । शयन में लुम तुर्रा धर के विराजे । अनोसर में चीरा रहे । शयन में रोशनी होवे । कर्णफूल चार ।	हरी जरी को	फेनी संजाब की खीर बिलसारू छाछ बड़ा पकोड़ी की कढ़ी, बड़ी को शाक	उत्थापन सूं चौतरा पर काँच के बड़े छज्जा में सांगामांची पर विराजे । (ति. श्री इंद्रदमनजी महाराज को सिद्ध करायो भयो ।)
चतुर्दशी	रूपचौदस	सुनहरी फूरकसाई के वस्त्र, चीरा । कर्णफूल चार । हीरा की जोड़ी । सीसफूल पर हीरा को अर्धचन्द्र । फोंदना बड़े । उत्सव के भारी सिंगार । चंद्रिका एक सादा । सब जड़ाऊ साज आवे । सांझ कूं सब क्रम चौतरा पर बड़ी सफेद काँच की हटड़ी में होय । फूल के पड़गा आवें ।	फूरकसाई की सुनहरी पिछवाई	ठोड़ मठड़ी छाछ बड़ा खीर बिलसारू पकोड़ी की कढ़ी, बड़ी के शाक	आज मंगला बेग सो होवें । बड़ो अभ्यंग होवे । स्नान के पट्टा पर श्री कूं पधरा के बीड़ा दो धर के तिलक अक्षत प्रभू कूं करने । पीछे अक्षत बड़े करके अभ्यंग कराने ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या (दिपावली)

- श्री कूं अभ्यंग होवें । सफेद फूरकसाई जरी के वस्त्र, कुल्हे । तीन जोड़ के भारी सिंगार होवे । सिसफूल हीरा को । कमलपत्र होय । कुंडल लाल मकराकृत । फोंदना बड़े । गादी के सिंगार दूहेरा वाके उपर कंठला हमेल । चोटी माणक की । पाँच चंद्रिका को जोड़ । वेणुवेत्र जड़ाऊ ।
- राजभोग में तीनकूडा, बड़ी के शाक, पापड़, कचड़िया, खीर की गागर, बड़ा की छाछ, बिलसारू, आदि आवें ।
- साज सफेद फूरकसाई को । सब जड़ाऊ साहित्य । राजभोग आरती थाली की । अनोसर नित्यवत् ।
- सांझ की सेवा नित्यवत् । श्रृंगार विजय नहीं होय । शयन भोग धरे । शयन भोग सराय कानजगाई होवें । पीछे प्रभुन कूं हटड़ी में पधरावनो । हटड़ी में सब जड़ाऊ साहित्य आवें । आरती होवें । चून के दिवला की चार मूठीया वार के आरती होवें । भेंट करनी । श्रृंगार बड़ो करनो । कुल्हे धर के एवं बागा धर के पोढ़े । अनोसर में शयन के सब विशेष सामग्री अधिक में आवे ।

कार्तिक शुक्ल पक्ष एकम् (अन्नकूट)

श्री कूं जगाय के ओढ़नी ओढ़ावनी । मंगल भोग आवे । भोग सरे पीछे सिंगार करने । स्नान होय । सिंगार सब दिवारी को आवे । बड़े हमेल नहीं धरे । कमलपत्र होय । गोकर्ण लाल जरी के धरे चोटी धरे । आरसी देखे । राजभोग आवे । राजभोग में सब उत्सव की सामग्री आवे ।भोग सराय के बीड़ी अरोगे माला धरे । राजभोग आरती थाली की होय । पीछे पितांबर श्री ठाकुरजी के बांई आड़ी ओढ़ावनो माला के नीचे । श्री गोवर्धन पूजन के कीर्तन होय । कीर्तन होते में श्री ठाकुरजी दुध की हांडी अरोगे पीछे बीरी अरोगे । पीछे अन्नकूट की सब तैयारी साजनी । अन्नकूट की तैयारी होवे तब शीतल भोग आवे । अन्नकूट में वर्षभर की सब सामग्री यथाशक्ति सो करनी । अन्नकूट में सबसू आगे दूधघर पीछे अनसखड़ी और वाके पीछे सखड़ी भोग धरने । सखड़ी भोग के मध्य में कोरी हल्दी को अष्टदल मांड के वापे छाब पधरा के वामें कुंडा में पाटिया की सेवा पधरा के वाके उपर भात को कूट साजनो । कोट के उपर मध्य में शिखर गुंजा आवे । और चार गुंजा एक प्रभु सम्मुख मध्य में एवं वाके पीछे एक और दो अगल बगल में आवें । पीछे तुलसी की माला कोट पर आवें ।पीछे जल की अधकि की मथनिया प्रभु के पास शीतल भोग सराय के साजनी । और अन्नकूट के भोग धरने । समय भये भोग सरावने । आरती करनी पीछे सब सेवा नित्यक्रम सूं पहुँचनी ।

मास - कार्तिक (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
द्वितीया	भाईदूज	अभ्यंग होय । लाल खीनखाप को वागा । जरी को चीरा । ओढ़नी पन्ना की जोड़ी । श्रृंगार हल्को उत्सव को । चंद्रिका एक सादा । अनोसर में चीरा रहे ।	जरी को लाल	आखे मूंग की खिचड़ी पापड़ बिलसारू छाछ बड़ा संजाब की खीर बड़ी को शाक दही भात ।	राजभोग की सामग्री प्रभु सन्मुख साज के कोर दाल सो साननो । पीछे हाथ धोय के सब स्वरूपन को तिलक अक्षत करनो बीड़ा २ कंकू लगाय के धरने पीछे आरती चार चून के मुठीया वार के करनी । न्योछावर पीछे तुलसी समर्प के भोग धरवें ।
तृतीया		सफेद जरी के वस्त्र चीरा । जमाव को कतरा । माणक की जोड़ी । सिंगार हल्को ।	गिरिराज धारण की पिछवाई		
चतुर्थी		पीली जरी के वस्त्र	गिरिराजजी वालो		
पंचमी		पिरोजी जरी के वस्त्र । पिरोजी ग्वाल पाग । मोरशिखा १ । कर्णफूल ४ । आभरण हीरा के । फोंदना । मध्य के सिंगार ।	लुचई		
षष्ठी		श्याम जरी के वस्त्र, चीरा । पिरोजा के आभरण । श्रृंगार हल्को । कतरा जमाव को ।	लुचई		
सप्तमी		हरी जरी के वस्त्र । गोल चीरा । चंद्रिका एक सादा । माणक के आभरण । श्रृंगार हल्को ।	लुचई		
अष्टमी	गोपाष्टमी	वस्त्र सुनहरी जरी के । बड़ो हीरा को मुकुट । आभरण सब हीरा के कुण्डल मकराकृत । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी दुहेरा । चोटी नहीं धरे । पट बाघ बकरी को मंडे । अनोसर में लाल कुल्हे धरें ।	श्याम साटन पर सफेद कसीदा की गाय	मनोर के लड़ुवा, खीर संजाब की, बिलसारू छड़ियल दाल पकोड़ी की कढ़ी, दही भात, बड़ी के शाक, पापड, कचड़िया	
नवमी	अक्षय नवमी	अन्नकूट के श्रृंगार होवें । तुलसीजी की वनमाला आवे । अनोसर में केसरी कुल्हे धरे ।	बड़ी गायन वारी पिछवाई	ठोड़, मठड़ी, बूंदी के लड़ुवा, मीठे पेठा को बिलसारू	पलना समय पलना कूं मध्य में पधराय के परिक्रमा देनी
दशमी		लाल लिसमा जरी के वस्त्र । चीरा । बांकी चंद्रिका एक सादा । सुनेरा के आभरण । श्रृंगार हल्को ।	लाल जरी को		सफेदी बड़ी होय । रजाई, गद्दल आत्मसुख आदि शीतकालिक साहित्य की तैयारी करनी ।

।। श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: ।।

मास - कार्तिक (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकादशी	देव प्रबोधिनी एकादशी	अभ्यंग उबटन होय । सुनहरी फूरकसाई जरी के वस्त्र । कुल्हे जोड़ पाँच चंद्रिका को । सब उत्सव के आभरण आवें । श्रृंगार भारी । फोंदना बड़े । मकराकृति कुंडल । लाल शीशफूल हीरा को अर्धचन्द्र । कमलपत्र होय । चोटी नहीं धरें ।	सफेद जरी को	(मंडप में) जलेबी फलाहार बिलसारू रतालू (राजभोग में) पाटिया बैंगन के शाक और सब उत्सव की सामग्री	- झारीजी पर लाल पटवस्त्र आवें आज सू नित्य । - सिंहासन के नीचे रूई की गादी बिछे । - लाल रूई को आत्मसुख वागा के भीतर नित्य आवें । - चोटी बंद आज सू । - गुड़ की कटोरी राजभोग में नित्य आवे । - मंडप मांडनो ।
देवोत्थापन के समय की तैयारी - साठा कों मंडप बंधवावनो । चार छाब तैयार करनी वामे प्रत्येक में सांठा के टूक, बैंगन, शकरकंद, बोर, सिंहाड़ा, चणा की भाजी पधरावनी । गद्दल तैयार राखनो । अंगीठी प्रकटावनी । घी के १६ दिया जोड़के रखने । श्री ठाकुरजी को मंडप में पधरावने । झारीजी पधराने । अब सावधानी सू तीन बिरीया श्री ठाकुरजी को चौकी सुद्धा उठावने पीछे दण्डवत करि के गद्दल धरनो । चारो छाब मण्डप के चारो कोना में धरनी । श्री ठाकुरजी कूं तिलक अक्षत करनो । तुलसी समर्पनी । झारी के नालवा खोलने भोग धरनो । तुलसी पूजन करनो । समय भये भोग सराय आरती करनी । परिक्रमा ४ करनी ।					
द्वादशी	श्री गुसांइजी के प्रथम लालजी महानुभाव श्री गिरिधरजी को उत्सव	देव प्रबोधिनी को ही रहे ।	एकादशी वारो ही रहें ।	पाँच भात सिखरन बड़ी छाछ की हांडी खीर की हांडी, बूंदी जलेबी और सब उत्सव की सामग्री आवे ।	राजभोग में श्री ठाकुरजी को तिलक, अक्षत होवें । बीड़ा दो कंकु लगाय के जेमनी आड़ी धरें । मुठिया ४ वार के आरती न्योछावर करने । पीछे सब आपस में तिलक करें ।
त्रयोदशी		लाल जरी के वस्त्र । चीरा, हीरा को सेहरा आभरण सब हीरा के । श्रृंगार भारी दुहेरा, फोंदना बड़े ।	लाल जरी को	लुचई	
चतुर्दशी	ति. श्री गोविन्दजी महाराज (द्वितीय) को उत्सव	पीले खीनखाप के वस्त्र । माणक की कुल्हे चमकनो जोड़ । आभरण सब माणिक के । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी । पाग धरके पोढ़े ।	पीले खीनखाप को साज	बूंदी, जलेबी, खीर, बड़ा की छाछ बिलसारू तीनकूड़ा बड़ी के शाक	शयन में केसरी गोल पाग धरे कछुक श्रृंगार धरे सादा बाकी चंद्रिका धरे । शयन आरती पीछे सब बड़ो हो जाय ।
पूर्णिमा		सफेद जरी के वस्त्र । हीरा को खूप धरें । फोंदना मध्य के ।	सफेद जरी को साज	लुचई	

मास - मार्गशीर्ष (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		लाल साटन के वस्त्र लाल साटन को टोपा पर पन्ना को टोपा धरें । पन्ना के सब आभरण । श्रृंगार हल्को ।	लाल साटन को साज	मनोर के लड्डुवा	
द्वितीया		मध्य को श्रृंगार । एच्छिक		बुरा भुरक्या	
तृतीया		हल्को श्रृंगार । एच्छिक		बुंदी के लड्डुवा	
चतुर्थी	छः स्वरुप को उत्सव (श्री प्रियाजी के मंदिर में भयो)	लाल लिसमारजी के वस्त्र । लाल जरी को बीच को दुमला । चमकने रूपेरी कतरा चंद्रिका । हीरा के आभरण बड़े फोंदना । श्रृंगार भारी । कुंडल । पट बाघ बकरी को मंडे । अनोसर में कसूमल पाग धरके पोढ़े ।	काशीवाली काँच की पिछवाई	मनोहर के लड्डुवा पोटिया की सेंव	आज सफेदी नहीं आवे गादी तकीया पर
पंचमी		जरी के टोपा, जरी के वस्त्र, हीरा के आभरण		फेणी	
षष्ठी		एच्छिक		बूंदी के लड्डुवा	
सप्तमी	ति. श्री गोविन्दलालजी महाराजश्री को उत्सव	पतंगी वस्त्र को जोड़ । श्रृंगार हल्को । हीरा के आभरण । गोल पाग पर पीलो छोड़ । पीलो गद्दल ।		पाँच भात मोहनथाल संजाब की खीर	श्री प्रियाजी सोना को पलना झूले । भोग संध्या आरती में श्री प्रियाजी श्रीजी में पधारे ।
अष्टमी	श्री गुसांईजी के द्वितीय लालजी श्री गोविंदरायजी को उत्सव	लाल साटन के वस्त्र । माणक की कुल्हे । हीरा के तुर्रा पन्ना को पान । हीरा पन्ना के आभरण । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी । जोड़ चमकनो । अनोसर में वस्त्र की लाल कुल्हे धर के पोढ़ें ।	लाल साटन को साज	उपरेटा	
नवमी		लाल साटन के वस्त्र एवं टोपा ।	सोसनी फूलवार साटन को साज	कूर के गुंजा उड़द की रोटी	खीर रोटी को मंगल भोग आरोगे ।
दशमी	नियम को	हरी घटा ।			
एकादशी		श्रृंगार फोंदना के । एच्छिक		सकरपारा, शकरकंद को मगद	
द्वादशी	गो. ति. श्री इंद्रदमनजी महाराजश्री द्वारा श्री नवनीतप्रियाजी को ब्रज सूं फेर मेवाड़ पधरायवे को विशेष मनोरथ	नियम को श्रृंगार लाल जरी को चीरा । बैंगनी रंग के साटन के वस्त्र । सुनहरी जरी की फतवी । लूम की कलंगी । हीरा के आभरण । श्रृंगार हल्को ।		मंगलभोम में तवापूड़ी आरोगे राजभोग में मठड़ी	संध्याभोग आरती में चौक में चांदी की हटड़ी में विराजे ।
त्रयोदशी	श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव	लाल साटन के वस्त्र पन्ना की कुल्हे । पन्ना के आभरण । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी ।	लाल साटन को	घेवर कचोरी	
चतुर्दशी		एच्छिक		खाजा	
अमावस्या	श्याम घटा नियम को	श्याम वस्त्र बिना किनारी के । गादी तकिया सब श्याम साटन के । हीरा के आभरण । माला तुलसी की । श्रृंगार हल्को ।	श्याम	खोवा के गुंजा	

। । श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: । ।

मास - मार्गशीर्ष (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		एच्छिक		माखन बड़ा	
द्वितीया		श्याम घटा को सब क्रम श्री के वस्त्र सफेद जरी के । चीरा । गद्दल सफेद जरी को । आभरण हीरा के । श्रृंगार हल्को । श्री के विराजवे की गादी पर सफेदी रहे । (पाँच चंद्रमा को सिंगार)	पिछवाई में चाँदी को चंद्रमा आवे	पपची	''आधो मुख निलांबर सो ढाक्यो'' ये कीर्तन होवे ।
तृतीया		एच्छिक		मोहनथार	
चतुर्थी		एच्छिक		चोरीठा को मगद	
पंचमी		मोती को ट्क्यो वागा वस्त्र धरे । श्याम गोल पाग । हीरा मोती के आभरण । श्रृंगार हल्को ।	मोती को ट्क्यो भयो	बेंगन भात को मंगल भोग राजभोग में बूंदी	
षष्ठी		एच्छिक		मूंग को मगद	
सप्तमी	श्री गुसांईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव	लाल रेशमी छापा के वस्त्र । हीरा की जड़ाऊ कुल्हे । माणक के सब आभरण । श्रृंगार भारी दुहेरा । फोंदना बड़े । पाँच चंद्रिका को जोड़ अनोसर में कसुमल कुल्हे धर के पोढ़ें ।	हरी साटन पे किनारी की झाड़ वालो	धास के लड्डुवा सजाब की खीर	
अष्टमी	श्री गोवर्धनेशजी महाराज कृत सात स्वरुप को उत्सव	लाल खीनखाप के वस्त्र । हीरा की कुल्हे । हीरा के आभरण । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी दुहेरा । सुनहरी जोड़ श्री मस्तक पर । अनोसर में केसरी कुल्हे धर के पोढ़ें ।	लाल साटन की केल के झाड़ वाली	दहीथड़ा बासोंदी	
नवमी	नियम को	लाल घटा ।		मीठी कचोरी लाखन शाही	श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई बैठे
दशमी		एच्छिक		फेनी	
एकादशी		कुल्हे मुकुट को सिंगार लाल खीनखाप के वस्त्र हीरा पन्ना के आभरण । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी ।	हरे डुमस को साज	सकरपारा, सूरण को मगद	
द्वादशी		हरी साटन के वस्त्र बिना किनारी के । कसुमल गोल पाग हीरा के आभरण । हीरा की मोर शिखा हीरा को कतरा दुहेरा । श्रृंगार हल्को ।	बिना किनारी को हरी साटन को साज लाल हसिया को	खीर वड़ा की चौकी	
त्रयोदशी		एच्छिक		मोहनथाल	
चतुर्दशी		अमरसी घटा		चूरमा	
पूर्णिमा	श्रीनाथजी में छप्पन भोग नियम को	लाल लिसमाजरी के वस्त्र टिपारो । श्वेतजरी के गोकर्ण । जोड़ चमकनो हीरा के आभरण । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी दुहेरा । अभ्यंग होय ।	श्याम साटन पर जरी की गाय वाली	चंद्रकला लोंग भात कांजी की चपटिया	

* घटा को क्रम एच्छिक होवें । खाली दिन देख के अंगीकार करानी । नियम की घटा नियम के दिन ही होवें । बाकी सभी घटा के दिन में बदलाव ले सके हैं ।

मास - पौष (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम	गो. कुल भूषण ति. श्री दाऊजी श्री राजीव लोचनजी महाराजश्री को उत्सव (रीत को सिंगार)	लाल साटन के वस्त्र हीरा को कीरीट, हीरा की जोड़ी फोंदना बड़े । गादी को सिंगार दूहेरा ।	लाल बदरून की जाल को साज	पाँच भात, जलेबी बूंदी ठौड़े, मठड़ी	राजभोग में काँच के बंगला में विराजे । संध्या में सूखा मेवा की मंडली में विराजे ।
द्वितीया		एच्छिक		पाटिया के लडुवा	
तृतीया	पीली घटा	पीली साटन के वस्त्र सुनेरा की जोड़ी		बुंदी के लडुवा	
चतुर्थी		एच्छिक		खाजा	
पंचमी		एच्छिक		मोहनथार	
षष्ठी		एच्छिक		चोरीठा को मगज	
सप्तमी	द्वि. पी. श्री कल्याणरायजी (बड़े) को उत्सव (रीत को सिंगार)	पक्षी भांत के साटन के वस्त्र । मीना की कुल्हे । पाँच चंद्रिका को जोड़ । फोंदना मध्य के सिंगार भारी ।	पक्षी की भात के साटन के	बूंदी जलेबी मेवा बाटी	
अष्टमी	(रीत को सिंगार)	लाल साटन के वस्त्र, कसूमल पाग, श्रृंगार हल्को, चंद्रिका सादा	लाल साटन को हरे हसिया को	मगद	सफेद बड़ी हो जाय
नवमी	प्रभुचरण श्री गुसांईजी श्री विठ्ठलनाथजी को उत्सव (रीत को सिंगार)	बेगि मंगला होवें । अभ्यंग पीली साटन के वस्त्र । जन्माष्टमीवत् सिंगार । कमल पत्र । तीन जोड़ को भारी सिंगार । पाँच चंद्रिका को जोड़ ।	जन्माष्टमीवारो नयो	आखो वारा बूंदी जलेबी को । सब उत्सव की सामग्री आवें ।	राजभोग दर्शन में तिलक होवें २ बीड़ा धरे चार मुठिया वार के आरती होय । भेंट होय ।
दशमी	परचारगी को सिंगार	सब सिंगार उत्सव वारो आवे । बड़े हमेल नहीं धरे ।		ठोड़ मठड़ी	सांझ कू सफेदी चढ़े ।
एकादशी	ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१७६९)	पन्ना की कुल्हे । पन्ना के आभरण । जोड़ सादा पाँच चंद्रिका को । सफेद खीनखाप के वस्त्र अनोसर में कसूमल गोल पाग धरे ।	सफेद खीनखाप को	बूंदी जलेबी को वारा	
द्वादशी		हीरा को टीपारा । हीरा की जोड़ी । कतरा चंद्रिका साद । हरे खीनखाप के वस्त्र	हरे खीनखाप को	मंगल भोग में खरमंडा की चौकी	
त्रयोदशी		एच्छिक		बेसन को मगद खरखरी	
चतुर्दशी		एच्छिक		सेव के लडुवा	
अमावस्या	गो. कुल कौस्तुभ चि. श्री भूपेशकुमारजी श्री विशाल कुमारजी बावाश्री को जन्मदिन	वस्त्र केसरी । हीरा को टीपारा । आभरण हीरा पन्ना के । रूमाल धरे ।	केसरी	आलू को उड़दचना दाल के वघार को शाक । गुजराती दाल पाँच भात	सोना को पलना झूले । राजभोग में सोना को बंगला धरें ।

मास - पौष (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		सोसनी वस्त्र, गोलपाग, हीरा के आभरण, हल्को सिंगार	सोसनी	माखन बड़ा	
द्वितीया		एच्छिक		मूंग को मगद	
तृतीया		एच्छिक		दहीबड़ा	
चतुर्थी		एच्छिक		बूरा भुरक्या	
पंचमी		एच्छिक		मठड़ी	
षष्ठी	गो. कुल दिवाकर श्री दामोदरलालजी को उत्सव	पीले साटन के वस्त्र, हीरा के आभरण । हीरा की टोपी । श्याम बाबरी । फोंदना छोटे । श्रृंगार मध्य को अनोसर में केसरी गोल पाग रहे ।	केसरी साटन को बदरून की जाल वालो	पाँच भात नारंगी भात	सोना को पलना
सप्तमी		सोसनी साटन के वस्त्र, हीरा के आभरण, टोपा के सिंगार ।	सोसनी साटन को	बूंदी को मोहनथार	
अष्टमी		दरियाई खूंट को दुमला, पीले वस्त्र, श्याम हसिंया के । फिरोजा के आभरण, छोटे फोंदना । मोरशिखा श्री मस्तक पर ।	पीलो श्याम हसिंया को	चूरमा	
नवमी		एच्छिक			
दशमी		एच्छिक			
एकादशी		एच्छिक			
द्वादशी		हीरा को पाग । हीरा के आभरण । फोंदना छोटे । श्री मस्तक पर चंद्रिका कतरा सादा । श्रृंगार मध्य को श्याम खीनखाप के वस्त्र ।	श्याम साज खीनखाप को	मंगल भोग में मांडा की चौकी	
त्रयोदशी		श्री मस्तक पर दुरंगी पाग । लाल हरी । लाल साटन को बागा । हरी दरियाई के बन्द । हरयो टोपा । श्रृंगार हल्को ।	लाल हरे हसिया को	गुड़ खांड को चुरमा	
चतुर्दशी		लाल फूलवर साटन के वस्त्र । श्री मस्तक पर श्याम मीना को दुमाला हीरा की कलगी । छोटे फोंदना । नीलम की माला सब आवे	लाल फूलवर साटन को		
पूर्णिमा		एच्छिक		खोवा	
मकर संक्रान्ति					
	भोगी को उत्सव (रीत को श्रृंगार)	छींट के वस्त्र, पाग । अभ्यंग । हीरा की जोड़ी मध्य को सिंगार कर्णफूल ४ । फोंदना छोटे । चंद्रिका सादा ।	छींट को	छड़ियल दाल पकोड़ी की कढ़ी चीला गुड़ बूरा खरखरी	भोगी को उत्सव संक्रान्ति के अगले दिन मान्यो जाय है ।
	संक्रान्ति को उत्सव	छींट के वस्त्र । गोल पाग । हीरा के आभरण । लूम की कलंगी श्रृंगार हल्को ।	छींट को	आखे मूंग की खिचड़ी । सातधान को खिचड़ी । चूरमा तिल की सामग्री	गेंद नई धरनी

मास - माघ (कृष्ण पक्ष)					
शुभ मिति	**उत्सव**	**श्रृंगार**	**साज**	**सामग्री**	**विशेष**
एकम		हरी साटन के किनारी के वस्त्र । माणक को खूंप । हीरा माणक के आभरण । फोंदना मध्य के ।	हरी साटन को	बूंदी के लडुवा	
द्वितीया		एच्छिक		पाटिया के लडुवा	
तृतीया		एच्छिक		मोहनथाल	
चतुर्थी		एच्छिक		चुरमा	
पंचमी	वसंत के सिंगार	सफेद साटन पर लाल चिड़िया । माणक की जोड़ी । वसंत पंचमीवत् श्रृंगार ।		मनोहर के लडुवा	
षष्ठी		एच्छिक		थेपला	
सप्तमी		एच्छिक		बूंदी को मोहनथाल	
अष्टमी	रीत को सिंगार (श्री बड़े दाऊजी महाराज को उत्सव	लाल खीनखाप के वस्त्र । हीरा के आभरण । हीरा के कुल्हे । मकराकृत कुंडल । हीरा की जोड़ी । जोड़ चमकनो । भारी दूहेरा सिंगार । फोंदना बड़े । अनोसर में कसूमल कुल्हे धरें ।	लाल खिनखाप को	बूंदी जलेबी को वारा । सब उत्सव की सामग्री आवे	सफेदी नहीं चढ़े ।
नवमी		एच्छिक		बुंदी के लडुवा	
दशमी		एच्छिक		सेव के लडुवा	
एकादशी	एच्छिक	भारी श्रृंगार । टिपारा में गोकर्ण तथा चंद्रिका धरे ।		शकरकंद को मगद	
द्वादशी	एच्छिक	डोल के आगम को सिंगार । लाल साटन के सफेद चिड़िया के वस्त्र । डोलवत सिंगार । माणक की जोड़ी ।		खाजा	
त्रयोदशी		एच्छिक		कूर के गुंजा	
चतुर्दशी		एच्छिक		पुवा	
अमावस्या		श्यानरी के वस्त्र । पुरातन पाग जड़ाऊ । श्रृंगार हल्को ।		गुड़ की तवापूरी	पाँच दिन जरी आवें ।

मास - माघ (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		सेहरा को सिंगार होय । लाल जरी को चीरा । फोंदना मध्य के । सिंगार भारी ।		सीरा	
द्वितीया		एच्छिक		मालपुवा	
तृतीया		एच्छिक		मनोहर के लडुवा	
चतुर्थी		सफेद फुरकसाई जरी के वस्त्र । हीरा को किरीट । हीरा की जोड़ी । फोंदना बड़े । मकराकृत कुंडल । श्रृंगार भारी दुहेरा । उत्सव के सब आभरण । सब उत्सव को क्रम होवे ।	गंगा जमनी फरूखशाही को साज	गुड़कल की सामग्री मंगल भोग में आवे । मठड़ी को वारा	संध्या आरती पीछे चंदरवा पिछवाई सब सफेद बंधवावने गादी तकिया सब फागुन के निकलवावे बसंत पंचमी के वस्त्र को जोड़ नयो सिद्ध करवावनो
पंचमी	वसंत पंचमी (रीत को सिंगार)	अभ्यंग । श्याम बार की खिड़की की पाग । सफेद बागा । आभरण श्याम हरे मीना के । ४ कर्णफूल । चंद्रिका सादा । फोंदना मध्य के श्रृंगार मध्य को । फरगुल हरी साटन को आवे । टोपा हरयो साटन को आवे ।		सेव के लडुवा को वारा । मनोर के लडुवा खीर की गागर छाछ बड़ा सब उत्सव की सामग्री	राजभोग धर के वसंत को अधिवासन होवें । राजभोग सराय के श्वेत उपरना सब ठीकाने बिछाय के खेल भोग (मेवा, मिठाई, कतूला) धरने ।
		गेंद छड़ी फूल के आवे । आंबा के दो मोड़ पीठक के तकिया पर आवे । खेल को साज साजनो पहले चंदन सो पीछे गुलाल सो फेर अबीर सो पीछे चोवा सूं खेले । श्री कूं खिलाय के पिछवाई सिंहासन खंड चंदन एवं गुलाल सो खिलावनो । पीछे चंदरवा चंदन सूं खेले । पीछे वसंत का खिलावनो । पीछे गुलाल अबीर उड़ावनो । पीछे उपरणा उठावने । पीछे उत्सव भोग दूधघर अनसकड़ी को आवे । समय भये भोग सराय झारीजी भर के खंड पाट मांडनो आरती करनी । वसंत कूं संध्या आरती पीछे उठाय लेनो । अनोसर नित्यवत् । अनोसर में पाग रहे ।			
षष्ठी		गुलाबी जामदानी के वस्त्र । कुल्हे । जोड़ चमकनो । आभरण लाल मीना के । श्रृंगार मध्य को ।		खीचड़ी गुंजा मठड़ी लडुवा	
सप्तमी		गुलाबी गोल पाग सफेद वागा । गुलाबी फतवी । हरे मीना के आभरण । कतरा सादा । श्रृंगार हल्को ।		बूंदी के लडुवा	
अष्टमी		सफेद टीपारा गुलाबी गोकर्ण बीच में चंद्रिका । श्रृंगार मध्य को ।		पूवा	
नवमी		सफेद जगन्नाथी को वागा । श्रृंगार एच्छिक ।		सेव के लडुवा	
दशमी		लाल खिड़की की पाग लाल दरियाई के बूंद वागा पर धरे । हरे मीना के आभरण लूम की कलगी । श्रृंगार हल्को ।		दुधपुवा	
एकादशी		केसरी खूंट के दुमला पे मीना को सेहरा । सफेद लाल मीना के आभरण । मध्य के फोंदना सिंगार भारी ।		छुट्टी बूंदी	
द्वादशी		श्याम खिड़की की पाग सफेद वागा । लाल मीना के आभरण । श्री मस्तक पर जमाव को कतरा । श्रृंगार हल्को ।		गुड़ की तवापुड़ी	
त्रयोदशी		सफेद फेंटा । फेंटा को साज । श्याम मीना के आभरण । छोटे फोंदना ।		मोहनथार	
चतुर्दशी		एच्छिक			
पूर्णिमा	डंडा रोपण को उत्सव	खिड़की की पाग । सफेद वागा । चोवा की चोली । सोना के आभरण । श्रृंगार हल्को ।		मीठी कचोरी दूध के हांडा बिलसारू और सब उत्सव की सामग्री	खेल समय कपोल मंडे । पोटली आवे । पिचकारी आवे ।

मास - फागुन (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		एच्छिक		बुंदी के लड्डुवा	सोना के सिंगार प्रारंभ
द्वितीया		एच्छिक		लुचई	
तृतीया		एच्छिक भारी श्रृंगार		लुचई	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		गुलाबी वस्त्र । सोने को सेहरो । श्रृंगार भारी ।		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी	श्रीनाथजी को पाटोत्सव	अभ्यंग । केसरी डोरिया के वस्त्र । केसरी गोल पाग । पिरोजा के आभरण । चोवा की चोली । लूम की कलंगी । श्रृंगार हल्को ।	नयो चढ़े	ठोड़ मठड़ी खरमंडा सब उत्सव को सामग्री	आज सूं वसंती छींट के वस्त्र शुरू फरगुल बन्द होवे आज सूं ।
अष्टमी		मुकुट को सिंगार		लुचई	
नवमी		केसर की चोली । श्वेत वस्त्र । श्वेत केसरी खिड़की की पाग । कतरा । हरे मीना के आभरण । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
दशमी		एच्छिक		लुचई	
एकादशी		मुकुट को सिंगार भारी		लुचई	
द्वादशी		लाल खिड़की की पाग गुलाल की चोली । श्वेत वस्त्र । हरे मीना के आभरण । लुम की कलंगी । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
त्रयोदशी		सफेद गोल पाग । हरे मीना के आभरण । जमाव को कतरा । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
चतुर्दशी		पतंगी वस्त्र । पाग पतंगी । जमाव को कतरा । सोना के आभरण । छोटे फोंदना । कर्णफूल ४ । मध्य को श्रृंगार ।		लुचई	
अमावस्या		चोवा के वस्त्र । गोल पाग । सोना के आभरण । चमकनो कतरा । श्रृंगार हल्को ।		बेड़मी	

मास - फागुन (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		पतंगी वस्त्र । खिड़की की पाग । अबीर की चोली । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
द्वितीया		पीले वसंती वस्त्र । खूंट के दुमाला । सोने को सेहरा । श्रृंगार भारी ।		लुचई	
तृतीया		सफेद वस्त्र । जरी की खिड़की की पाग । सुनहरी लुम तुरी कतरा । श्रृंगार हल्को		लुचई	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		टिपारा, कतरा चंद्रिका चमकने । सोने का आभरण । वस्त्र सफेद । श्रृंगार भारी ।		लुचई	
षष्ठी		गुलाबी वासंती छींट के वस्त्र । गोल पाग । श्याम मीना के आभरण । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
सप्तमी	श्री मथुरेशजी को पाटोत्सव गो.ति.श्री दाऊजी महाराज (तृतीय) को गादी उत्सव गो.ति.श्री इन्द्रदमनजी महाराज को जन्मदिन	पतंगी वस्त्र । सोना को सेहरा । स्वर्ण के सब आभरण । भारी सिंगार । बड़े फोंदना । फोंदना पर त्रवल । श्रृंगार हल्को ।		सब उत्सव की सामग्री आवे	राजभोग में गुलाल कुण्ड आवें । शयन में श्री दाऊजी महाराज (तृतीय) के मनोरथ सूं सोना की पाग धरें । चाँदी के बंगला में तिबारी में विराजे ।
अष्टमी	बगीचा में पधारें	सफेद वस्त्र । जोड़ी फिरोजा की । मयूराकृत कुंडल । मीना को मुकुट । श्रृंगार भारी (मिलमा) ।		कूर के गुंज मनोर के लड्डुवा उत्सव की सामग्री	राजभोग सराके बगीचा में पधरावने । फूल को मुकुट धरनो । मनोरथ के भोग धरने । भोग सराय आचमन मुखवस्त्र बीरी पीछे भारी खेल करावनो । बगीचा में फुंवारा चले ।
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		वस्त्र डोरिया के सफेद सुनहरि किनारी के । छज्जेदार किनारी को चीरा । लुम की कलंगी लाल मीना की जोड़ी । श्रृंगार हल्को ।		मनोर के लड्डुवा	आज सूं गारी गावें ।

। । श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: । ।

मास - फागुन (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकादशी	कुंज एकादशी	केसरी डोरिया के किनारी के वस्त्र । लाल सफेद मीना के आभरण । मकराकृति कुंडल । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी ।		सकरपारा केसरी घेवर । गुलाब को सीरा और सब उत्सव की सामग्री	कुंज बंधे राजभोग में फूल को मुकुट धरें ।
द्वादशी		सफेद वसंती छींट के वस्त्र किनारी । गोल पाग । दुहेरो कतरो । हरे मीना के आभरण । श्रृंगार हल्को ।			
त्रयोदशी		सफेद श्याम खिड़की की पाग । सफेद जामदानी के वस्त्र । किनारी के । लाल मीना के आभरण । जमाव को कतरा । फोंदना छोटे ।		मनोर के लड्डुवा	
चतुर्दशी		केसर की बूटी को सफेद वस्त्र । पाग पे कतरा मच्छाकृति का । फिरोजा मीना के आभरण ।		बाटी	
पूर्णिमा	होली को उत्सव (अभ्यंग)	किनारी के सफेद वस्त्र । पाग खिड़की की । कर्णफूल ४ । सादा चंद्रिका । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी ।		सेव के लड्डुवा पुवा	अति भारी खेल होय । शयन में श्री प्रभुन की दाढ़ी रंगे अनोसर पीछे निज मंदिर आदि की सब गुलाल निकालनी ।

मास - चैत्र (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम	डोल को उत्सव (अभ्यंग)	सफेद छज्जेदार पाग, सफेद जामदानी के वस्त्र बिना किनारी के । कर्णफूल ४ । लाल हरे मीना की जोड़ी । चंद्रिका सादा । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी ।		ठोड़ मठड़ी को वारा सब उत्सव की सामग्री	राजभोग आरती पीछे श्री प्रभुन कूं झालर घंटा बजते में डोल में पधरावने । सूक्ष्म खेल होय । उत्सव को सब भोग डोल में आवे । फेर भोग सराय बीरी अरोगाय के भारी खेल करावना । आरती करनी । चार परिक्रमा करनी । एक दूसरे कूं खिलावनो ।
		● डोल के दिन कपोल, मंडन, पिचकारी एवं पोटली नहीं आवें । ● परिक्रमा पीछे श्री प्रभुन कूं डोल सूं पधरावने । ● समोये जल में अंगवस्त्र भीजोय के श्रीअंग सूं सब गुलाल विजय करनी । ● पीछे जड़ाऊ गादी पर प्रभुन कूं पधराय के जरी को आत्मसुख धरनो । पीछे अनोसर तक नित्य क्रम पहोंचनों ।			
द्वितीया	द्वितीया पाट को उत्सव (अभ्यंग)	लाल लिसमा जरी के वस्त्र । हीरा की कुल्हे । हीरा की जोड़ी । फोंदना बड़े । श्रृंगार दुहेरा । चमकनो जोड़ अनोसर में कसुमल कुल्हे धरकर पोढ़ें ।	जरी को	खीचड़ी के नग मेवा भात उत्सव की सब सामग्री	आज सूं अंगीठी बंद । राजभोग में गुलाब की मंडली गर्मी विशेष होय तो जरी पाँच दिन ही धरे । फेर रंगीन वस्त्र धरे ।
द्वितीया		एच्छिक		लुचई	
तृतीया		एच्छिक		लुचई	
चतुर्थी		टिपारा को सिंगार		लुचई	
पंचमी		मुकूट को सिंगार		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी		पन्ना को सेहरा पन्ना के आभरण । गुलाबी वस्त्र ।		लुचई	
अष्टमी		एच्छिक		लुचई	
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		एच्छिक		लुचई	
एकादशी		डांक को मुकूट । पिरोजी वस्त्र । माणिक के आभरण । श्रृंगार भारी ।		लुचई	
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी		एच्छिक		लुचई	
चतुर्दशी		एच्छिक		लुचई	
अमावस्या		श्याम वस्त्र		लुचई	

मास - चैत्र (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम	संवत्सर उत्सव (अभ्यंग) (नियम के श्रृंगार)	लाल छापा के वस्त्र । कसूमल कुल्हे । कुल्हे पर पान । पाँच - चन्द्रिका को जोड़ । मकराकृत कुंडल । फोंदना बड़े । हीरा की जोड़ी । श्रृंगार दुहेरा ।	लाल छापा को	मनोहर के लड्डुवा बड़ा की छाछ । बिलसारू उत्सव की सब सामग्री । नीम प्रभु को सन्मुख कर के समाधान होवें । भोग नहीं आवे नीम कों	मंगला में उपरना ओढ़े । शयन में आधो माला को जोड़ शुरू होवें । पंखा चढ़े । राजभोग में गुलाब की फूल मंडली में विराजे । पंड्याजी टीपणी वांचे ।
द्वितीया		श्याम छापा के वस्त्र लाल खूंट को दूमला । फिरोजा के आभरण । छोटे फोंदना । श्रृंगार मध्य को । कलंगी, चंद्रिका १ श्रीमस्तक पर धरे ।	श्याम छापा को		
तृतीया	प्रथम गणगौर	चौफूली चूंदड़ी के वस्त्र । पाग छज्जेदार । हीरा के आभरण । श्रृंगार हल्को । त्रवल के विशेष श्रृंगार होय । लूम तुरी एवं लूम की कलंगी धरें ।	गणगौर के चित्र को	मिठाई के थाल आवे	
चतुर्थी	द्वितीय गणगौर	पचरंगी लहरिया के वस्त्र । पाग । चमकनो कतरा । लूम तुरी । हीरा पन्ना के आभरण । छोटे फोंदना । ४ कर्णफूल ।	गणगौर के चित्र को	मिठाई के थाल आवे	
पंचमी	तृतीय गणगौर	गुलाबी वस्त्र । पन्ना को इकनगा मुकुट । मध्य के फोंदना । पन्ना की जोड़ी ।	गुलाबी	बूंदी की मिठाई के थाल	गुलाब की फूल मंडली होवें । राजभाग में ।
षष्ठी	श्री गुसांईजी के छठे लालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव	कसुमल वस्त्र । कसुमल कुल्हे । जोड़ चमकनो । हीरा पन्ना के आभरण । मध्य के फोंदना । श्रृंगार भारी ।	कसुमल	दूध के हांडी मड़ला । तुवर की दाल ।	
सप्तमी		एच्छिक		लुचई	
अष्टमी	(रीत को सिंगार)	कसुमल वस्त्र । गोल पाग । सादा चंद्रिका । श्रृंगार हलको । पन्ना के आभरण ।	कसुमल		

मास - चैत्र (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
नवमी	रामनवमी (अभ्यंग)	वस्त्र केसरी डोरिया के । केसरी कुल्हे । कमल पत्र होय । मयुराकृत कुंडल । श्रृंगार भारी दुहेरा । पाँच चंद्रिका को जोड़ । सब उत्सव को साज ।	रामलीला के चित्र की ।	ठोड़ मठड़ी मेवा बाटी बड़े की छाछ खीर चोखा की उत्सव की सब सामग्री ।	राजभोग में गुलाब की फूल मंडली । राजभोग में बालकृष्णलालजी के पंचामृत होवें । श्री ठाकुरजी कों पंचामृत पीछे तलसोजी समर्पनी पीछे उत्सव भोग धरणो । पीछे भोग सराय के थाली की आरती
दशमी		परचारगी के श्रृंगार	रामलीला के चित्र को	बूंदी के लडुवा	
एकादशी	श्री महाप्रभुजी के उत्सव की बधाई बैठे ।	केसरी डोरिया के वस्त्र । कर्णफूल ४ । माणिक्य की जोड़ी । फोंदना छोटे । टोपी केसरी झालर की		लुचई	श्रृंगार में आज से टोपी प्रारंभ होवे ।
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी		एच्छिक		लुचई	
चतुर्दशी		एच्छिक		लुचई	
पुर्णिमा		डांक को मुकुट । श्रृंगार भारी ।		लुचई	

मास - वैशाख (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		एच्छिक । वस्त्र रंगीन लहरिया के धरें		लुचई	
द्वितीया		एच्छिक		लुचई	
तृतीया		एच्छिक		लुचई	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		एच्छिक । श्री आचार्यजी के उत्सव के आगम श्रृंगार		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी		एच्छिक		लुचई	
अष्टमी		एच्छिक		लुचई	
नवमी		कसुमल गोल पाग । जोड़ी सुनेरा की । कसुमल वस्त्र । चंद्रिका सादा बांकी । श्रृंगार हल्को ।	कसुमल	लुचई	सोना को सब साज निकले
दशमी	श्री नवनीत प्रियाजी के मंदिर में पाँच स्वरूप पधारे सो उत्सव	कसुमल वस्त्र रूपेरी किनारी के । झीने मोती को मुकुट । हीरा मोती की जोड़ी । कुंडल हीरा के मकराकृति । फोंदना मध्य के ।	पाँच स्वरूपन के मनोरथ को	आमरस की बूंदी के लड्डुवा बिलसारू	ति. श्री गोवर्धनलालजी महाराज श्री ने पधराये ।
एकादशी	श्री आचार्यजी महाप्रभुजी को उत्सव	अभ्यंग । वागा-वस्त्र केसरी । कुल्हे किनारी के चित्र की । कमल पत्र होय । माणक के मकराकृत कुंडल । फोंदना बड़े । श्रृंगार दुहेरा । कंठला । चोटी । श्रृंगार भारी । पाँच चंद्रिका को जोड़ । अनोसर में कुल्हे धर के पोढ़ें ।	केसरी	बूंदी जलेबी को वारा । आखो पाटिया । पाँच भात सब उत्सव की सामग्री आवे ।	गादी तकिया पर आधी सफेदी बिछे । निज मंदिर में धुरी हल्दी को चौक मंडे । राजभोग दर्शन में जडाऊ कुंजा आबखोरा सब साज आवे । पाट चौकी मांडनो आरसी दिखावनी झालर घंटा बजे श्री ठाकुरजी को तिलक अक्षत करके बीड़ा जेमनी आड़ी धरने । ४ मुठीया वार के आरती करनी आपस में तिलक करनो
द्वादशी		परचारगी को सिंगार सब साज वही रहें । आज सो वागा बंद हो जाय । कसुमल वस्त्र-टोपी पन्ना की जोड़ी । श्रृंगार हल्को ।		बूंदी के लड्डुवा	भोग आरती शयन में चंदन के बंगला में विराजे । मंगला श्रृंगार बंगला में होवे ।
त्रयोदशी		कसुमल वस्त्र - टोपी पन्ना की जोड़ी श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
चतुर्दशी		एच्छिक		लुचई	
अमावस्या		एच्छिक		लुचई	

मास - वैशाख (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		एच्छिक वस्त्र । डांक को मुकुट । श्रृंगार भारी ।	सफेद कसीदा को	लुचई	आज के बाद मुकुट के श्रृंगार आषाढ़ (शुक्ल एकादशी) तक बंद ।
द्वितीया		कसुमल वस्त्र, गोल पाग, पन्ना के आभरण । श्रृंगार हल्को । चंद्रिका एक बांकी ।	लाल		उष्ण कालिक सेवा की तैयारी करनी ।
तृतीया	अक्षय तृतीया	अभ्यंग । वस्त्र सफेद मलमल के केसर की छापा के कोर के । सफेद कुल्हे । जोड़ी मोती की । फोंदना मध्य के । कुंडल मकराकृति । तीन चंद्रिका को जोड़ । श्रृंगार भारी । अनोसर में कुल्हे धर के पोढ़ें ।	सफेद डोरिया को । सफेद किनारी को ।	सतुवा को वारा । मनोर के लडुवा सब उत्सव की सामग्री आवें । उत्सव भोग में दही भात एवं दूधघर	सफेद चंदुवा टेरा बंधवावने । गुलाब दानी - २ चंदन की माटी के कुंजा चंदन की बरनी सब को अधिवासन होवे । पिछे झालर घंटा शंखनाद होते भये में श्री ठाकुरजी कूं चंदन धरावनो । तुलसी समर्पनी फेर पंखा करने । पीछे उत्सव भोग धरने । समय भये सराय के आरती करनी ।
❖ कसुमल, पीले, लहरिया, चुंदड़ी, हरे, श्याम वस्त्र आज सूं नहीं धरें । ❖ माला को पूरो जोड़ प्रारंभ । ❖ तकिया की पट्‌टी आज से बंद ।					
चतुर्थी		परचारगी को सिंगार		लुचई	
पंचमी		एच्छिक		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी	श्री लाल गिरिधरजी को उत्सव	केसरी डोरिया के वस्त्र । केसरी खिड़की की पाग । लूम की कलंगी । हीरा की जोड़ी । कर्णफूल हीरा के । श्रृंगार हल्को ।	केसरी डोरिया को	बूंदी जलेबी सिखरन भात	आज सूं फुहारा, जल की होज छिड़काव प्रारंभ होवे ।
अष्टमी		एच्छिक		लुचई	
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		एच्छिक		लुचई	
एकादशी		एच्छिक		लुचई	
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी		गुलाबी वस्त्र, गोल पाग, सादा चंद्रिका । श्रृंगार हल्को ।		लुचई	
चतुर्दशी	नृसिंह चतुर्दशी	अभ्यंग । केसरी मलमल के रूपेरी किनारी के वस्त्र । केसरी कुल्हे । हीरा मोती की जोड़ी । फोंदना बड़े । मकराकृति कुंडल । बघनखा । तीन चंद्रिका को जोड़ ।	केसरी रूपेरी किनारी को	वारा ठोड मठड़ी को सब उत्सव की सामग्री आवें ।	पट बाघ बकरी को मंडे । आज सूं श्री यमुनाजी को थाल आवे । मंदिर में शयन भोग पीछे पंचामृत होवें शालिग्रामजी को ।
पुर्णिमा		परचारगी को सिंगार ।		लुचई	

मास - ज्येष्ठ (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		सफेद मलमल के वस्त्र । फेंटा । मोती की जोड़ी । श्रृंगार हल्को । कतरा सादा	सफेद	लुचई	
द्वितीया	चार स्वरूप श्री नवनीत प्रियाजी के मंदिर में विराजे सो उत्सव	चंदनी वस्त्र किनारी के । चंदनी फेंटा । कुंडल मकराकृति । हीरा की जोड़ी । फोंदना छोटे । कतरा चंद्रिका सादा । श्रृंगार मध्य को । अनोसर में फेंटा रहें ।	चंनदी किनारी को	मनोर के लड्डुवा	श्री दाऊजी महाराज ने पधराये ।
तृतीया		एच्छिक		लुचई	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		एच्छिक		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी		एच्छिक		लुचई	
अष्टमी		एच्छिक		लुचई	
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		एच्छिक		लुचई	
एकादशी		एच्छिक		लुचई	
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी		एच्छिक		लुचई	
चतुर्दशी		एच्छिक		लुचई	
अमावस्या		रित को । सफेद वस्त्र एवं फेंटा । कतरा सादा । श्रृंगार हल्को । हीरा की जोड़ी । अनोसर में फेंटा रहे ।	कमल की	लुचई	निज मंदिर आदि में जल भरें । उत्थापन सूं श्री प्रभु तिबारी में बिराजे ।

मास - ज्येष्ठ (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		एच्छिक			
द्वितीया		एच्छिक			
तृतीया		एच्छिक			
चतुर्थी		एच्छिक			
पंचमी		एच्छिक			
षष्ठी		एच्छिक			
सप्तमी		एच्छिक			
अष्टमी		एच्छिक			
नवमी		एच्छिक			
दशमी	गंगा दशमी (ति. श्री. गोविंदलालजी गादी विराजे सो उत्सव)	अभ्यंग नहीं । अरगजी वस्त्र । खिडकी की पाग । हीरा को जोड़ी । कर्णफूल हीरा के । श्रृंगार हल्को । लूम की कलगी । पाग धरके पोढ़े ।	कमल को	सतुवा की डबरिया, दही भात की डबरिया, सिखरन भात, आंबा की बरफी, मीठे खाज, मठड़ी, सुहारी	राजभोग आरती पीछे जल भरावें । संध्या आरती में तिबारी में विराजे जल में ।
एकादशी		एच्छिक		लुचई	
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी	श्री वीर गिरिधारीजी को उत्सव	अरगजी वस्त्र किनारी के खुंट के दुमाला । मोती को सेहरा । हीरा की जोड़ी । मकराकृत कुंडल । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी ।	अरगजी किनारी को	बूंदी, जलेबी, आमरस भात, खीर	
चतुर्दशी		श्रृंगार हल्को । टोपी अथवा पाग को ।		लुचई	गोपीवल्लभ भोग धर के मंदिर में जल स्नान यात्रा के निमित्त भर्यो जाय है । शयन भोग धर के शय्यामंदिर में सुखी हल्दी को अष्टदल मांड के वापू गागर पधरा के जल भरनो । गुलाब जल जमुना जल, चंदन खस, कली, तुलसीदल सब पधरावने । अधिवासन होवें ।

मास - ज्येष्ठ (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
पूनम	स्नानयात्रा	सफेद कुल्हे । सफेद छापा के वस्त्र । मोती की जोड़ । फोंदना मध्य के । कुंडल मकराकृति । तीन चंद्रिका को जोड़ । श्रृंगार भारी । अनोसर में कुल्हे रहे ।	सफेद छापा को साज	सतुवा के लाडु । आम, फलफूल, अंकुरी । खोपरा । दही भात । उत्सव की सब सामग्री ।	मंगला आरती पीछे सिंहासन आगे तिबारी में स्नान को थाल सुखा हल्दी को अष्टदल करके पधरावनो । वामें स्नान को पट्टा । वापें कुंकू को अष्टदल । वापें चिकनो वस्त्र बिछावनो । कोर कर्यो भयो । स्नान के जल की गागर पतुवा की चौकी पर पधरावनी । श्री ठाकुरजी को रात के श्रृंगार विजय करके पट्टा पर पधरावने । झालर घंटा शंखनाद होय । श्री कूं तिलक अक्षत करके चरणारविंद में महामंत्र सहित तुलसी पधरावनी । शंख में तुलसी पधरावनी । शंख में जल लेके स्नान करावनो ।

। । श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: । ।

मास - आषाढ़ (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम	श्री गोवर्धन लालजी महाराज गादी विराजे को उत्सव	गुलाबी किनारी के वस्त्र । गुलाबी गोल पाग । लूम की कलंगी । हीरा की जोड़ी । श्रृंगार हल्को । सिंगारी आप	सघन कंदरा के चित्र की	आमरस के मनोर के लड्डुवा खीर	सांस कूं तिबारी में चंदन के सिंहासन पर विराजे । स्नान यात्रा पीछे फूलवारी आवें ।
द्वितीया		एच्छिक		लुचई	
तृतीया		एच्छिक		लुचई	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		एच्छिक		लुचई	
षष्ठी		एच्छिक		लुचई	
सप्तमी		एच्छिक		लुचई	
अष्टमी		एच्छिक		लुचई	
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		एच्छिक		लुचई	
एकादशी		एच्छिक		लुचई	
द्वादशी		एच्छिक		लुचई	
त्रयोदशी		एच्छिक		लुचई	
चतुर्दशी		एच्छिक		लुचई	
अमावस्या	ति. श्री गिरिधरजी महाराज घस्यारवारेन को उत्सव	अधरंग बिना किनारी के वस्त्र । अधरंग गोल पाग । हीरा की जोड़ी । लूम की कलंगी । श्रृंगार हल्को ।	अधरंगी बिना किनारी की	बूंदी, जलेबी उत्सव की सब सामग्री	

।। श्री गोवर्द्धनधर: नवनीतप्रियौ विजयत: ।।

मास - आषाढ़ (शुक्ल पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम		गुलाबी किनारी के वस्त्र । गोल पाग गुलाबी । श्रृंगार हल्को ।	सुनहरी किनारी के धोरा की	लुचई	
द्वितीया	रथयात्रा को उत्सव (तीज को भी आवे)	अभ्यंग । वस्त्र सुनहरी किनारी के धोरा के । वागा धरे । ओढ़नर झालर की । कुल्हे । आभरण सब उत्सव के हीरा, पन्ना, माणिक्य के । फोंदना बड़े । कमल पत्र होय । पाँच चंद्रिका को जोड़ सादा । श्रृंगार दुहेरा ।		बूंदी के लड्डुवा आम, अंकुरी फल सब उत्सव की सामग्री	झालर घंटा शंखनाद होते भये में प्रभु राजभोग पीछे रथ में विराजे । थाल की आरती होवे । रथ सूं उतरकर पीछे वागा फोंदना बड़े हो जाय ।
तृतीया		कुल्हे हीरा की जोड़, फोंदना नहीं आवे ।		खिचड़ी	
चतुर्थी		एच्छिक		लुचई	
पंचमी		एच्छिक		लुचई	
षष्ठी	कसूंबा छठ ति. श्री गोविन्दजी द्वितीय को गादी उत्सव ति. श्री इन्द्रदमनजी महाराज को गादी उत्सव	कसूमल वस्त्र रूपहरी किनारी के । कसूमल पाग मोती की जोड़ । फोंदना मध्य के । चार कर्णफूल । चंद्रिका सादा ।	कसूमल रूपहरी किनारी की	बूंदी, जलेबी, बिलसारू, खीर	भोग संध्या आरती में लाल साटन के बंगला में विराजे । आज विशेष शयन के दर्शन खुले ।
सप्तमी		गुलाबी वस्त्र । गुलाबी टोपी । मोती के आभरण । श्रृंगार हल्को ।	जंगली छापा की	लुचई	
अष्टमी		सफेद वस्त्र हरे हसिया के । माणिक की जोड़ी । टिपारा ।	छींट की हाथी वाली	लुचई	सांझ को फूल को सिंगार टिपारा को होय ।
नवमी		एच्छिक		लुचई	
दशमी		एच्छिक		बेंगन आज ताई अरोगे ।	बेंगन की सब सामग्री आवे ।
एकादशी		सफेद वस्त्र हसिया के मोती को मुकुट । मोती की जोड़ी । श्रृंगार भारी ।	हसिया को		
द्वादशी		हसिया के वस्त्र, गुलाबी टोपी, श्रृंगार हल्को ।			
त्रयोदशी		हसिया के वस्त्र । पाग फिरोजा की जोड़ी । श्रृंगार हल्को । चंद्रिका सादा ।	हसिया को	लुचई	
चतुर्दशी		नियम को श्रृंगार । सफेद वस्त्र सादा । बिन किनारी के । फेंटा । मोती की जोड़ी कतरा इकहरा सादा । हल्के सिंगार ।	सादा सफेद	लुचई	सांझ कूं वनमाला धरें ।
पूनम		एकदाली चुनरी के वस्त्र । मोती को मुकुट । मोती की जोड़ी । श्रृंगार भारी ।	व्रजभक्तन वालो चित्र को	कचोरी	

मास - श्रावण (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकम	हिंडोरा विराजवे को उत्सव (नियम को)	अभ्यंग । वस्त्र कसूमल सुनहरी किनारी के । पाग कसुमल - हरी खिड़की की । जोड़ी हीरा की । कर्णफूल ४ । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी दुहेरा । चंद्रिका सादा । साज साहित्य सब सोना को । अनोसर में पाग धर के पोढ़े ।	लाल साटन को धोरा को	बूंदी के लड्डुवा	एकम् या दूज को श्रेष्ठ चन्द्रमा देख के श्री कूं हिण्डोरा में पधरावने । एकम् खाली होय तो वा दिन सफेद वस्त्र-टोपी हल्को सिंगार । हिंडोरा रोप के अधिवासन् करनो । झारीजी पधरावने । झालर घंटा बजवे भये में प्रभु हिंडोरा में पधारें । थोड़ो झुलाय के आज विशेष में भोग आवे ।
द्वितीया	नियम को	पीले वस्त्र - पीली पाग । माणक की जोड़ी । ४ कर्ण फूल । चंद्रिका सादा । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी दुहेरा ।	पीले साटन पर कीनारी के लहाियाा को	लुचई	
तृतीया		सोसनी वस्त्र । कुल्हे सोसनी हीरा के आभरण । जोड़ चमकनो । फोंदना मध्य के । मकराकृत कुंडल । श्रृंगार भारी इकहरो ।	सोसनी साटन को धोरा को	लुचई	
चतुर्थी		हरे वस्त्र, हरी पाग । माणक के आभरण । लोलक बिंदी । चंद्रिका चमकनी । श्रृंगार मध्य को ।	हरे साटन को लाल हसिया को	लुचई	
पंचमी		वस्त्र अमरसी । पाग छज्जेदार । फिरोजा की जोड़ी । कर्णफूल ४ । चंद्रिका चमकनी । श्रृंगार मध्य को ।	अमरसी साटन पर श्याम हसिया को ।	लुचई	
षष्ठी		गुलाबी वस्त्र । गुलाबी खूंट को दुमला । हीरा को सेहरा । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी इकहरो ।	गुलाबी	लुचई	
सप्तमी		फिरोजी वस्त्र । फिरोजी फेंटा । आभरण माणक के । छोटे फोंदना । कुंडल । मोरशिखा । कतरा । श्रृंगार मध्य को ।		लुचई	
अष्टमी	जन्माष्टमी की बधाई बैठे ।	केसरी मलमल के वस्त्र । कुल्हे केसरी । हीरा पन्ना की जोड़ी । जोड़ सादा । फोंदना मध्य के । श्रृंगार भारी इकहरा । कुंडल मकराकृत ।	केसरी धोरा की	लुचई	
नवमी		पचरंगी लहरिया के वस्त्र । छज्जेदार पाग । कर्णफूल ४ । नवरत्न के आभरण । श्रृंगार भारी । चंद्रिका चमकनी ।	पचरंगी लहरिया के	लुचई	
दशमी	श्री ति. गोवर्धनेशजी महाराज को उत्सव	गुलेनार वस्त्र । रूपेरी डांक को मुकुट । हीरा के आभरण । मकराकृत कुंडल । फोंदना बड़े । श्रृंगार दुहेरा ।	लाल श्याम हसिया की । जाल की ।	जलेबी सब उत्सव की सामग्री	आज काँच को हिंडोरा होय

मास - श्रावण (कृष्ण पक्ष)

शुभ मिति	उत्सव	श्रृंगार	साज	सामग्री	विशेष
एकादशी		श्याम वस्त्र । सोना को किरीट । सुनेरा के आभरण । कुंडल ।	श्याम धोरा की	लुचई	
द्वादशी		पिरोजी वस्त्र । पिरोजी टिपारा । गुलाबी मीना के आभरण । श्रृंगार भारी ।	पिरोजी	लुचई	
त्रयोदशी		श्याम पीले लहरिया के वस्त्र । फेंटा । हीरा फिरोजा के आभरण । छोटे फोंदना । कतरा चंद्रिका चमकने । श्रृंगार मध्य को ।	लहरिया को	लुचई	
चतुर्दशी		लहरिया के वस्त्र । गोल पाग । नीलम के आभरण । कतरा चमकनो ।	लहरिया को	लुचई	
अमावस्या		श्याम धोरा किनारी के वस्त्र । हीरा को मुकुट । हीरा के आभरण । फोंदना बड़े । श्रृंगार भारी । पाग धर के अनोसर होय ।	श्याम धोरा को	उत्सव की	काँप को हिंडोरा झुले । चौक में हांडी जुड़े । शयन आरती हिंडोरा में होय ।